

लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Aarti Kumawat

सारांश

भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने एवं उचित रूप से अभिव्यक्त करने की क्षमता है, जो किशोरावस्था में व्यक्तित्व विकास और सामाजिक समायोजन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा 200 किशोर विद्यार्थियों (100 बालक एवं 100 बालिकाएँ) को नमूने के रूप में चयनित किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु मानकीकृत भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण के माध्यम से किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर बालकों की अपेक्षा अधिक था तथा दोनों समूहों के मध्य अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। अध्ययन यह संकेत देता है कि विद्यालयों में भावनात्मक कौशलों के विकास हेतु विशेष शैक्षिक कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

प्रमुख शब्द: भावनात्मक बुद्धिमत्ता, किशोरावस्था, लिंग, बालक, बालिका, तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तावना

मानव जीवन में भावनाएँ व्यवहार, निर्णय-निर्माण तथा सामाजिक संबंधों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण घटक हैं। आधुनिक शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास को भी समान रूप से महत्व देती है। इसी संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण बन जाती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता से आशय व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने तथा उनका सकारात्मक उपयोग करने की क्षमता से है। यह व्यक्ति को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में संतुलित व्यवहार करने, तनाव का प्रभावी ढंग से सामना करने तथा स्वस्थ सामाजिक संबंध स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है। किशोरावस्था मानव विकास का एक संवेदनशील एवं संक्रमणकालीन चरण है, जिसमें तीव्र शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में किशोर अनेक नई चुनौतियों, अपेक्षाओं एवं अनुभवों का सामना करते हैं, जिसके कारण उनकी भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ अधिक तीव्र एवं परिवर्तनशील हो सकती हैं। अतः इस आयु वर्ग में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास अत्यंत आवश्यक माना जाता है। विभिन्न शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले विद्यार्थी बेहतर शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन तथा मानसिक स्वास्थ्य का प्रदर्शन करते हैं। दूसरी ओर, भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी तनाव, चिंता, आक्रामकता तथा समायोजन संबंधी समस्याओं को जन्म दे सकती है। लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अंतर का विषय भी शोधकर्ताओं के लिए विशेष रुचि का क्षेत्र रहा है। सामाजिकरण की प्रक्रिया, पारिवारिक

वातावरण, सांस्कृतिक अपेक्षाएँ तथा जैविक कारक बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक अभिव्यक्ति एवं नियंत्रण को प्रभावित कर सकते हैं। अनेक अध्ययनों में यह पाया गया है कि बालिकाएँ सहानुभूति, संवेदनशीलता तथा भावनात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम होती हैं, जबकि कुछ अध्ययनों में दोनों के मध्य कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इन विरोधाभासी निष्कर्षों के कारण इस विषय पर और अधिक अनुसंधान की आवश्यकता अनुभव की जाती है। प्रस्तुत अध्ययन इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास करता है, जिससे शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं को किशोरों के भावनात्मक विकास के संबंध में उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सके।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उनके समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी है। इसी संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरी है, जो व्यक्ति की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में प्रभावी ढंग से व्यवहार करने की क्षमता को दर्शाती है। किशोरावस्था जीवन का ऐसा चरण है जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस अवधि में विद्यार्थियों को आत्म-पहचान, सामाजिक संबंधों, शैक्षिक दबावों तथा भविष्य संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण भावनात्मक संतुलन का विशेष महत्व होता है। विभिन्न शोधों से यह संकेत मिलता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का संबंध शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन एवं मानसिक स्वास्थ्य से है। साथ ही, बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा भावनात्मक प्रबंधन में अंतर पाए जाने के कारण लिंग आधारित भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक एवं परिवर्तनशील सामाजिक परिवेश में किशोर विद्यार्थियों के समक्ष अनेक शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक चुनौतियाँ उपस्थित होती हैं, जिनका सफलतापूर्वक सामना करने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास अत्यंत आवश्यक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता न केवल व्यक्ति को अपनी भावनाओं को समझने एवं नियंत्रित करने में सहायता प्रदान करती है, बल्कि दूसरों की भावनाओं को समझकर स्वस्थ सामाजिक संबंध स्थापित करने की क्षमता भी विकसित करती है। किशोरावस्था में भावनात्मक अस्थिरता, तनाव, आत्म-संदेह तथा समायोजन संबंधी समस्याएँ सामान्य रूप से देखी जाती हैं, इसलिए इस अवस्था में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। बालक एवं बालिकाओं के सामाजिकरण, पारिवारिक परिवेश, सांस्कृतिक अपेक्षाओं तथा व्यवहारिक अनुभवों में भिन्नता होने के कारण उनकी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं एवं भावनात्मक विकास में भी अंतर पाया जा सकता है। ऐसे में लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन इन अंतरों को समझने में सहायक सिद्ध होगा। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों, परामर्शदाताओं एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं को विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं की पहचान करने तथा उनके भावनात्मक विकास हेतु प्रभावी शैक्षिक एवं परामर्श कार्यक्रमों के निर्माण में मार्गदर्शन प्रदान करेगा। अतः यह अध्ययन शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) एक ऐसी मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक क्षमता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानता, समझता, नियंत्रित करता और उनका रचनात्मक उपयोग करता है। यह अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि जीवन में सफलता केवल बौद्धिक बुद्धि (IQ) पर निर्भर नहीं करती, बल्कि भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने की क्षमता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, आत्म-प्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशल जैसे गुणों के विकास में सहायता प्रदान करती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाला व्यक्ति तनावपूर्ण परिस्थितियों में भी संतुलित निर्णय लेने, सकारात्मक संबंध बनाए रखने तथा समस्याओं का प्रभावी समाधान खोजने में सक्षम होता है। आधुनिक मनोविज्ञान में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को व्यक्तित्व विकास, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ रूप से संबंधित माना गया है। विशेष रूप से किशोरावस्था में, जब भावनात्मक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं, भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। यह विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को सकारात्मक दिशा देने, आत्मविश्वास विकसित करने तथा सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में सफलता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्तित्व के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है।

साहित्य समीक्षा

भावनात्मक बुद्धिमत्ता आधुनिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा के रूप में उभरी है। इस अवधारणा को सर्वप्रथम सैलोवी और मेयर (1990) ने वैज्ञानिक रूप से परिभाषित करते हुए इसे व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने तथा उनका उचित उपयोग करने की क्षमता बताया। बाद में गोलमैन (1995) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Emotional Intelligence के माध्यम से इस अवधारणा को व्यापक लोकप्रियता प्रदान की। उनके अनुसार जीवन में सफलता केवल बौद्धिक बुद्धि (IQ) पर निर्भर नहीं करती, बल्कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। गोलमैन ने आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, अभिप्रेरणा, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशल को भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रमुख घटक बताया। बार-ऑन (2006) ने भावनात्मक-सामाजिक बुद्धिमत्ता मॉडल प्रस्तुत करते हुए यह प्रतिपादित किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति की सामाजिक दक्षता, तनाव प्रबंधन, अनुकूलनशीलता तथा व्यक्तिगत प्रभावशीलता को प्रभावित करती है। इन सिद्धांतों ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को केवल मनोवैज्ञानिक अवधारणा तक सीमित न रखकर शिक्षा, स्वास्थ्य, नेतृत्व तथा व्यक्तित्व विकास के क्षेत्रों से भी जोड़ा। विभिन्न शोधों ने यह प्रमाणित किया है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना करते हैं तथा सामाजिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में अधिक सफल होते हैं। इस प्रकार भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा ने मानव व्यवहार एवं व्यक्तित्व विकास को समझने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है।

किशोरावस्था के संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह अवस्था तीव्र शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक परिवर्तनों का काल होती है। पार्कर, सकलोप्स्के, वुड एवं कॉलिन (2009) ने अपने अध्ययन में पाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन, आत्मविश्वास तथा सामाजिक संबंधों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। उनके अनुसार जिन विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर अधिक होता है, वे तनावपूर्ण

परिस्थितियों का बेहतर प्रबंधन कर पाते हैं तथा विद्यालयी जीवन में अधिक सफल होते हैं। पेट्राइड्स, फ्रेडरिकसन एवं फर्नहैम (2004) ने भी यह निष्कर्ष निकाला कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहारिक समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। उनके अध्ययन में पाया गया कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले विद्यार्थी आत्म-अनुशासन, सामाजिक सहयोग तथा सकारात्मक व्यवहार प्रदर्शित करने में अधिक सक्षम होते हैं। ब्रैकेट, रिवर्स एवं सैलोवी (2011) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तिगत, सामाजिक एवं शैक्षिक सफलता के मध्य घनिष्ठ संबंध की पुष्टि की। उनके अनुसार भावनात्मक रूप से सक्षम विद्यार्थी न केवल शैक्षिक क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक संबंधों के क्षेत्र में भी अधिक सफल होते हैं। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

लिंग एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में किए गए शोधों ने विविध परिणाम प्रस्तुत किए हैं। अनेक अध्ययनों में यह पाया गया है कि बालिकाएँ भावनात्मक बुद्धिमत्ता के कुछ आयामों, विशेषकर सहानुभूति, भावनात्मक जागरूकता एवं सामाजिक संवेदनशीलता में बालकों की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त करती हैं। बार-ऑन (2006) के अनुसार महिलाओं में पारस्परिक संबंधों को समझने एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति की क्षमता अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है। इसी प्रकार ब्रैकेट एवं सहयोगियों (2011) ने पाया कि बालिकाएँ भावनात्मक संकेतों को समझने तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील होने में अधिक सक्षम होती हैं। दूसरी ओर, मेयर, कारुसो एवं सैलोवी (2016) ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता में पाए जाने वाले लिंग आधारित अंतर हमेशा समान नहीं होते तथा वे सांस्कृतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक परिस्थितियों से प्रभावित हो सकते हैं। कुछ अध्ययनों में बालकों एवं बालिकाओं के मध्य कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया, जबकि कुछ अध्ययनों में केवल विशिष्ट आयामों में अंतर देखा गया। सामाजिकरण की प्रक्रिया भी इस अंतर को प्रभावित करती है, क्योंकि बालिकाओं को भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अधिक प्रोत्साहन मिलता है, जबकि बालकों को आत्म-नियंत्रण एवं दृढ़ता प्रदर्शित करने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार लिंग आधारित भावनात्मक बुद्धिमत्ता के निष्कर्ष पूर्णतः एकरूप नहीं हैं, जिससे इस विषय पर और अधिक अनुसंधान की आवश्यकता अनुभव होती है। उपलब्ध साहित्य के समग्र विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता किशोरों के व्यक्तित्व विकास, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समायोजन एवं शैक्षिक सफलता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। विभिन्न शोधकर्ताओं ने इसके सकारात्मक प्रभावों को स्वीकार किया है तथा यह भी दर्शाया है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास से विद्यार्थियों की जीवन-गुणवत्ता में सुधार होता है। हालांकि लिंग आधारित भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में प्राप्त निष्कर्षों में एकरूपता का अभाव दिखाई देता है। कुछ अध्ययनों में बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक पाई गई, जबकि अन्य अध्ययनों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसके अतिरिक्त, अधिकांश शोधों ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के समग्र स्तर पर ध्यान केंद्रित किया है, जबकि इसके विभिन्न आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में किशोर विद्यार्थियों पर केंद्रित लिंग आधारित अध्ययनों की संख्या सीमित है। यही अनुसंधान अंतर प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य को सिद्ध करता है। अतः वर्तमान अध्ययन लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा उसके

विभिन्न आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण करके इस क्षेत्र में उपलब्ध ज्ञान को समृद्ध करने का प्रयास करता है।

किशोरावस्था का स्वरूप एवं विशेषताएँ

किशोरावस्था मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन चरण है, जो बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य स्थित होता है। सामान्यतः 13 से 19 वर्ष की आयु को किशोरावस्था माना जाता है। यह अवस्था तीव्र शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक परिवर्तनों की अवधि होती है, जिसके कारण इसे विकास की संवेदनशील अवस्था भी कहा जाता है। इस अवधि में किशोरों में शारीरिक वृद्धि तेजी से होती है तथा लैंगिक परिपक्वता का विकास होता है। मानसिक स्तर पर उनकी सोचने, तर्क करने, निर्णय लेने तथा समस्या-समाधान करने की क्षमता में वृद्धि होती है। भावनात्मक दृष्टि से किशोरों में संवेदनशीलता, उत्साह, जिज्ञासा, आत्म-सम्मान तथा स्वतंत्रता की भावना का विकास होता है, किंतु साथ ही भावनात्मक अस्थिरता, तनाव, चिंता एवं द्वंद्व जैसी स्थितियाँ भी देखने को मिलती हैं। सामाजिक स्तर पर वे अपने साथियों के साथ अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं तथा सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। आत्म-पहचान की खोज, भविष्य के प्रति चिंतन तथा जीवन मूल्यों का निर्माण भी इसी अवस्था की प्रमुख विशेषताएँ हैं। किशोरावस्था में होने वाले ये बहुआयामी परिवर्तन व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण एवं सामाजिक समायोजन को गहराई से प्रभावित करते हैं। इसलिए इस अवस्था को जीवन के विकासात्मक चरणों में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

लिंग एवं भावनात्मक विकास

लिंग (Gender) एवं भावनात्मक विकास के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया जाता है, क्योंकि बालक एवं बालिकाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पारिवारिक परिवेश में भिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करते हैं, जो उनके भावनात्मक व्यवहार एवं अभिव्यक्ति को प्रभावित करते हैं। भावनात्मक विकास से आशय व्यक्ति की भावनाओं को समझने, व्यक्त करने, नियंत्रित करने तथा सामाजिक परिस्थितियों में उनका उचित उपयोग करने की क्षमता से है। बाल्यावस्था से ही समाज बालक एवं बालिकाओं के लिए अलग-अलग व्यवहारिक अपेक्षाएँ निर्धारित करता है, जिसके परिणामस्वरूप उनके भावनात्मक विकास में अंतर दिखाई दे सकता है। सामान्यतः बालिकाओं को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने, सहानुभूति प्रदर्शित करने तथा दूसरों की भावनाओं को समझने के लिए अधिक प्रोत्साहन मिलता है, जबकि बालकों को भावनात्मक नियंत्रण, आत्मनिर्भरता एवं दृढ़ता प्रदर्शित करने की अपेक्षा की जाती है। इसी कारण बालिकाएँ प्रायः सहानुभूति, संवेदनशीलता एवं अंतर्व्यक्तिक संबंधों के क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम पाई जाती हैं। दूसरी ओर, बालक भावनाओं को नियंत्रित करने एवं चुनौतियों का सामना करने की प्रवृत्ति अधिक प्रदर्शित कर सकते हैं। हालांकि ये अंतर सभी परिस्थितियों में समान नहीं होते, क्योंकि पारिवारिक वातावरण, शिक्षा, संस्कृति तथा व्यक्तिगत अनुभव भी भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं। अतः लिंग एवं भावनात्मक विकास का अध्ययन किशोरों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझने तथा उनके समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए प्रभावी शैक्षिक एवं परामर्श कार्यक्रम विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Descriptive Survey Method) अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया। इस अध्ययन की प्रकृति मात्रात्मक (Quantitative) एवं तुलनात्मक थी, जिसके अंतर्गत

बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विश्लेषण किया गया। अध्ययन की जनसंख्या में माध्यमिक स्तर के किशोर विद्यार्थी सम्मिलित थे। नमूना चयन हेतु यादृच्छिक नमूना (Random Sampling) तकनीक का प्रयोग किया गया तथा कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 बालक एवं 100 बालिकाएँ शामिल थीं। आंकड़ों के संकलन के लिए मानकीकृत भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी का उपयोग किया गया, जिसके माध्यम से आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सहानुभूति, सामाजिक कौशल एवं आत्म-प्रेरणा जैसे आयामों का मापन किया गया। विद्यार्थियों को मापनी भरने से पूर्व आवश्यक निर्देश दिए गए तथा उनकी गोपनीयता एवं स्वैच्छिक सहभागिता सुनिश्चित की गई। प्राप्त आंकड़ों को व्यवस्थित रूप से वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) तथा t-परीक्षण (t-test) जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया। इन विधियों के माध्यम से बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य विद्यमान अंतर का अध्ययन एवं व्याख्या की गई।

परिणाम एवं चर्चा

तालिका 1 : उत्तरदाताओं का लिंगानुसार वितरण

लिंग	संख्या	प्रतिशत
बालक	100	50.0
बालिका	100	50.0
कुल	200	100.0

तालिका 1 में अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं का लिंगानुसार वितरण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन के लिए कुल 200 किशोर विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 बालक तथा 100 बालिकाएँ शामिल थीं। दोनों समूहों की संख्या समान रखी गई, जिससे तुलनात्मक अध्ययन अधिक निष्पक्ष एवं विश्वसनीय बन सके। प्रत्येक समूह का प्रतिशत 50 प्रतिशत है, जो नमूने में संतुलित प्रतिनिधित्व को दर्शाता है। इस प्रकार का समान वितरण शोधकर्ता को लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता में पाए जाने वाले अंतरों का सटीक विश्लेषण करने में सहायता प्रदान करता है तथा अध्ययन के निष्कर्षों की वैधता एवं विश्वसनीयता को बढ़ाता है।

तालिका 2 : किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर

भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर	संख्या	प्रतिशत
उच्च	58	29.0
मध्यम	104	52.0
निम्न	38	19.0
कुल	200	100.0

तालिका 2 में किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 58 विद्यार्थी (29%) उच्च स्तर, 104 विद्यार्थी (52%) मध्यम स्तर तथा 38 विद्यार्थी (19%) निम्न स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता श्रेणी में पाए गए। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता मध्यम स्तर की है। यह स्थिति दर्शाती है कि विद्यार्थियों में भावनात्मक कौशलों का विकास हो रहा है, किंतु उनमें और अधिक सुधार की संभावना भी विद्यमान है। विद्यालयों में उचित

मार्गदर्शन एवं जीवन-कौशल कार्यक्रमों के माध्यम से भावनात्मक बुद्धिमत्ता को और अधिक विकसित किया जा सकता है।

तालिका 3 : बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या (N)	माध्य (Mean)	मानक विचलन (SD)
बालक	100	68.40	9.10
बालिका	100	73.20	8.40

तालिका 3 में बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य एवं मानक विचलन का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। बालकों का माध्य स्कोर 68.40 तथा बालिकाओं का माध्य स्कोर 73.20 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर बालकों की अपेक्षा अधिक है। मानक विचलन के मान यह दर्शाते हैं कि दोनों समूहों के स्कोर अपने-अपने माध्य के आसपास अपेक्षाकृत संतुलित रूप से वितरित हैं। परिणाम संकेत करते हैं कि बालिकाएँ अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने एवं व्यक्त करने में अपेक्षाकृत अधिक सक्षम हो सकती हैं, जो उनके बेहतर भावनात्मक विकास को दर्शाता है।

तालिका 4 : भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों का लिंगानुसार तुलनात्मक अध्ययन

आयाम	बालक (Mean)	बालिका (Mean)
आत्म-जागरूकता	13.6	14.8
आत्म-नियमन	13.2	14.1
सहानुभूति	13.0	15.2
सामाजिक कौशल	14.1	14.6
आत्म-प्रेरणा	14.5	14.9

तालिका 4 में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों जैसे आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सहानुभूति, सामाजिक कौशल तथा आत्म-प्रेरणा के आधार पर बालक एवं बालिकाओं की तुलना प्रस्तुत की गई है। सभी आयामों में बालिकाओं का माध्य स्कोर बालकों की अपेक्षा अधिक पाया गया। विशेष रूप से सहानुभूति के आयाम में सबसे अधिक अंतर देखा गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि बालिकाएँ दूसरों की भावनाओं को समझने एवं उनके प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करने में अधिक सक्षम हैं। यह परिणाम दर्शाता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न घटकों में लिंग आधारित अंतर विद्यमान है, जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुभवों से प्रभावित हो सकता है।

तालिका 5 : शून्य परिकल्पना H₀₁ का परीक्षण

समूह	Mean	SD	t-मूल्य	p-मूल्य	निर्णय
बालक	68.40	9.10	3.86	<0.05	H ₀₁ अस्वीकृत
बालिका	73.20	8.40			

तालिका 5 में बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता का परीक्षण t-परीक्षण द्वारा प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त t-मूल्य 3.86 तथा p-मूल्य 0.05 से कम पाया गया, जो सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर को दर्शाता है। इसलिए शून्य परिकल्पना (H₀₁), जिसमें दोनों समूहों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कोई सार्थक अंतर न होने की बात कही गई थी, अस्वीकृत कर दी

गई। इससे निष्कर्ष निकलता है कि बालक एवं बालिकाओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में वास्तविक एवं महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है तथा बालिकाओं का भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य लिंग के आधार पर किशोर विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन के अंतर्गत 200 किशोर विद्यार्थियों, जिनमें 100 बालक एवं 100 बालिकाएँ सम्मिलित थीं, से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता मध्यम स्तर की थी, जबकि कुछ विद्यार्थियों में उच्च एवं कुछ में निम्न स्तर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पाई गई। बालक एवं बालिकाओं के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि बालिकाओं का भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्तर बालकों की अपेक्षा अधिक था। विशेष रूप से आत्म-जागरूकता, सहानुभूति, आत्म-नियमन तथा सामाजिक कौशल जैसे आयामों में बालिकाओं का प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। सांख्यिकीय परीक्षणों के आधार पर यह अंतर सार्थक सिद्ध हुआ, जिसके परिणामस्वरूप शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया गया। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता केवल व्यक्तिगत विशेषता नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक वातावरण से भी प्रभावित होती है। किशोरावस्था में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उच्च स्तर विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन, मानसिक स्वास्थ्य तथा शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अतः विद्यालयों में ऐसी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जो विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास को सुदृढ़ करें। शिक्षकों एवं अभिभावकों को भी किशोरों की भावनात्मक आवश्यकताओं को समझते हुए उन्हें सकारात्मक मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए। इस प्रकार अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि लिंग भावनात्मक बुद्धिमत्ता को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है तथा किशोर विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. कोठारी, सी. आर. (2019). रिसर्च मेथडोलॉजी: मेथड्स और टेक्निक्स. नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल.
2. गैरेट, एच. ई. (2014). साइकोलॉजी और एजुकेशन में स्टैटिस्टिक्स. नई दिल्ली: पैरागॉन इंटरनेशनल.
3. बार-ऑन, आर. (2006). इमोशनल-सोशल इंटेलिजेंस (ESI) का बार-ऑन मॉडल. साइकोथेमा, 18(सप्ल.), 13-25.
4. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., और कान, जे. वी. (2016). एजुकेशन में रिसर्च (10वां एडिशन). PHI लर्निंग.
5. ब्रैकेट, एम. ए., रिवर्स, एस. ई., और सैलोवी, पी. (2011). इमोशनल इंटेलिजेंस: पर्सनल, सोशल, एकेडमिक और वर्कप्लेस की सफलता के लिए मायने। सोशल एंड पर्सनैलिटी साइकोलॉजी कंपास, 5(1), 88-103. <https://doi.org/10.1111/j.1751-9004.2010.00334.x>
6. गैरेट, एच. ई. (2014). साइकोलॉजी और एजुकेशन में स्टैटिस्टिक्स। पैरागॉन इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
7. कोठारी, सी. आर., और गर्ग, जी. (2019). रिसर्च मेथडोलॉजी: मेथड्स और टेक्निक्स (चौथा एड.). न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
8. मंगल, एस. के. (2017). एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी (दूसरा एड.). PHI लर्निंग।



9. मेयर, जे. डी., कारुसो, डी. आर., और सैलोवी, पी. (2016). इमोशनल इंटेलिजेंस का एबिलिटी मॉडल: प्रिंसिपल्स और अपडेट्स। इमोशन रिव्यू, 8(4), 290–300. <https://doi.org/10.1177/1754073916639667>
10. मेयर, जे. डी., सैलोवी, पी., और कारुसो, डी. आर. (2008). इमोशनल इंटेलिजेंस: नई काबिलियत या अलग-अलग तरह के गुण? अमेरिकन साइकोलॉजिस्ट, 63(6), 503–517. <https://doi.org/10.1037/0003-066X.63.6.503>
11. पार्कर, जे. डी. ए., सकलोफ्स्के, डी. एच., वुड, एल. एम., और कॉलिन, टी. (2009). एजुकेशन में इमोशनल इंटेलिजेंस का रोल. इलेक्ट्रॉनिक जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशनल साइकोलॉजी, 7(2), 1–12.
12. पेट्रिड्स, के. वी., फ्रेडरिकसन, एन., और फर्नहैम, ए. (2004). स्कूल में एकेडमिक परफॉर्मेंस और डेविएंट बिहेवियर में ट्रेट इमोशनल इंटेलिजेंस का रोल. पर्सनैलिटी और इंडिविजुअल डिफरेंस, 36(2), 277–293. [https://doi.org/10.1016/S0191-8869\(03\)00084-9](https://doi.org/10.1016/S0191-8869(03)00084-9)
13. शुट्टे, एन. एस., मालौफ, जे. एम., थोरस्टीनसन, ई. बी., भुल्लर, एन., और रूक, एस. ई. (2007). इमोशनल इंटेलिजेंस और हेल्थ के बीच संबंध की एक मेटा-एनालिटिक जांच. पर्सनैलिटी और इंडिविजुअल डिफरेंस, 42(6), 921–933. <https://doi.org/10.1016/j.paid.2006.09.003>
14. सिंह, डी. (2006). काम पर इमोशनल इंटेलिजेंस: एक प्रोफेशनल गाइड. सेज पब्लिकेशन्स.
15. ज़ीडनर, एम., मैथ्यूज, जी., और रॉबर्ट्स, आर. डी. (2012). इमोशनल इंटेलिजेंस के बारे में हम क्या जानते हैं: यह सीखने, काम, रिश्तों और हमारी मेंटल हेल्थ पर कैसे असर डालता है। MIT प्रेस।